स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES
PEER REVIEWED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

Vol. 10, ISSUE-1 **(JULY-SEPTEMBER 2019)** **ISSN : 2395-7115**

प्रेरणा :
चौ. एम. सिहाग

प्रधान सम्पादक :
डॉ. रामफल दलाल

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
सह आचार्य एवं शोध निर्देशक (हिन्दी विभाग)
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी

सह सम्पादक :
समुद्र सिंह

प्रकाशक :
गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी–127021 (हरियाणा)

बोहल शोध मंजूषा परिवार

—: मानद संरक्षक :—

प्रो. राधेमोहन राय
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
परीक्षा नियंत्रक,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर

—: विषय विशेषज्ञ समिति :—

माई मनीषा महंत
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा धारवाड़

डॉ. रश्मि बजाज
अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग
वैश्य (पी.जी.) महाविद्यालय, भिवानी

डॉ. काकानि श्रीकृष्ण
आचार्य, नागार्जुन वि.वि.
नागार्जुन नगर, आ.प्रदेश

डॉ. राजपाल
राजकीय पी.जी. महाविद्यालय
हिसार

—: परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति :—

डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा 'शंकी'
पूर्व जि.शि.अधिकारी, च. दादरी

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

श्री जयलाल स्वामी
गोपी (भिवानी)

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. रजनी बाला
हिन्दी विभाग,
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. राजकुमारी शर्मा
नेपाल

डॉ. बिमलेश ए. तेवतिया
प्राचार्या, एस.जी. पटेल आर्टस् एण्ड पी.के. देसाई
कॉमर्स कॉलेज निझर, तापी, गुजरात

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली, उ.प्र.

डॉ.रामप्रवेश रजक
कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.केरल

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. अशोक कुमार मंगलेश
निदेशक, भारतीय अनुवाद परिषद
चरखी दादरी (हरियाणा)

डॉ. मोनिका शर्मा
हिन्दी महाविद्यालय,
हैदराबाद।

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. आशा जी.
सरकारी महिला कॉलेज
तिरूवन्तपुरम (केरल)

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोल्हापुर (महाराष्ट्र)

सम्पूर्ण बोहल शोध मञजूषा परिवार अवैतनिक है।

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट	7–7
2.	ग्रामीण जीवन : प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यासों में	डॉ0 तजिन्दर कौर	8–10
3.	Participation of Women in the Politics of MCD : Challenges and its Significance	Ranjani Bahadur Singh	11–16
4.	भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान एंव महत्त्व	डॉ. आशा देवी	17–23
5.	जशपुर के पुरातात्विक धरोहर	रामसेवक राम भगत डॉ. मंजुलता कश्यप	24–27
6.	हिंदी काव्य में अस्तित्ववाद का प्रभाव (अज्ञेय एवं मोहन राकेश के संदर्भ में)	अनमोल कुमार	28–30
7.	महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण में चिकित्सा शास्त्रीय विवेचन	डॉ० विवेक शर्मा	31–35
8.	मध्यकालीन भाषानाटक की सांगीतिक पद्धति (अंकिया–नाट के विशेष सन्दर्भ में)	Nitpriya Pralay	36–40
9.	आदिवासी प्रतिरोध की चिंगारी : 'अंगोर'	आशा पी.	41–43
10.	महादेवी वर्मा के साहित्य में नारी के असंतुलित जीवन का चित्रण (श्रृंखला की कड़ियाँ)	डॉ. आशा देवी	44–51
11.	हनुमानगढ़ शहर का नगरीय स्तरीकरण और पर्यावरण का बदलता स्वरूप	कल्पना डॉ0 सुनील कुमार	52–55
12.	स्त्रीपक्ष उपन्यास : नारी विमर्श	डॉ. देव्यानी महिड़ा	56–59
13.	राजस्थान राज्य के शहर हनुमानगढ़ का नगरीय स्तरीयकरण और पर्यावरण विमर्श	कल्पना डॉ0 सुनील कुमार	60–62
14.	हिंदी संत काव्य और मानवतावादी कविता	डॉ. अनिल प्रभाकर कांबले	63–65
15.	सामाजिक संरचना–वाल्मीकि रामायण के सन्दर्भ में	डॉ. आरती रानी	66–68
16.	गांधी चिन्तन : तात्त्विक आधार	डॉ. जुगल किशोर दाधीच	69–73
17.	तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आंखिन की देखी–कबीर	डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा	74–78
18.	समकालीन हिंदी कहानियों में आदिवासी अस्मिता : संघर्ष एवं प्रतिरोध	डॉ. विजी. वी	79–82
19.	विजयदान देथा की कहानी ''दुविधा'' व उसके फिल्मी रूपान्तरण में लोक संस्कृति की झलक	पीताम्बरी	83–84

20.	शिक्षा में गांधी–दर्शन	डॉ. पंडित बन्ने	85–87
21.	उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के संवेगात्मक, सामाजिक एंव शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. वंदना दुआ इंदु गोदारा	88–91
22.	मुस्लिम कथाकारों की दृष्टि में सनातन धर्म	डॉ. यतीन्द्रसिंह	92–95
23.	मीडिया और राष्ट्रीयता तथा न्यू मीडिया की चुनौतियॉ	डॉ0 नलिनी सिंह	96–102
24.	कुंवर नारायण की मिथकीय चेतना	रेखा कुमारी	103–105
25.	'जमुनी' में ग्रामीण जीवन का चित्रण	बी. कल्पना	106–111
26.	सुरेन्द्र वर्मा के साहित्य में पति–पत्नी के रिश्तों में संघर्ष	बबीता बिष्ट	112–113
27.	महिला कथाकारों के उपन्यासों में वर्णित जीवन संदर्भों के विविध आयाम	संगीता चुंडावत	114–117
28.	अमरीक सिंह दीप की कहानियों में सामाजिक सरोकार	अनुराधा पाकलपाटि	118–122
29.	सुधा अरोड़ा का जीवन परिचय	प्रो. रेणुका सं. कारजोल	123–124
30.	उच्चशिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु वांछित प्रक्रम	डॉ. प्रेमलता विकल	125–127

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.478

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July-September 2019 Page No. : 118-122

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

अमरीक सिंह दीप की कहानियों में सामाजिक सरोकार

बहुमुखी प्रज्ञाशाली श्री अमरीक सिंह दीप का जन्म 5 अगस्त सन् 1942 ई. में कानपुर में हुआ। वे मध्यवर्गीय परिवार से हैं और उनके पिता एक मामूली सरकारी नौकरी करते थे। सरकारी नौकरी होने के कारण 'दीप' जी ने हाई स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त की। अमरीक जी की शिक्षा कानपुर में हुई। पिताजी की तनख्वाह आठ भाई और तीन बहनों में हुई। पिताजी की तनख्वाह आठ भाई और तीन बहनों के लालन–पालन और पढाई के लिए पर्याप्त नहीं था। इसलिए लेखक को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अमरीक जी अंतर्मुखी स्वभाव के थे। वे एकांत प्रिय थे। दीपजी ने फैक्ट्री और पारिवारिक स्तर की उलझनों, परेशानियों, समस्याओं और सुख दुख को बहुत ही करीबी से जाना है। अमरीक सिंह दीप जी आर्डिनेन्स फैक्ट्री में शापफ्लोर पर एक मशीन मैन के बतौर काम करते थे। नौकरी करने के बाद बचे समय में लिखते थे। अमरीक सिंह दीप को साहित्य लिखने की प्रेरणा लगातार साहित्य पढते रहने से मिली है। वे अपना गुरू हिंदी साहित्य के पुरोधा और हंस पत्रिका के संपादक राजेन्द्र यादव जी को मानते है। वे साहित्य पढ़ना, साहित्यिक पुस्तकें खरीद कर अपनी लाइब्रेरी समृद्ध करना, सुरुचि पूर्ण फिल्में देखना, नये–नये शहरों और स्थानों का भ्रमण करने में रुचि रखते थे। अमरीक सिंह जी का विवाह 1965 ई में हुआ था। दीप जी की पत्नी का नाम श्रीमती बलबीर कौर है। उनकी तीन बेटियाँ और एक बेटा है।

रचनाएँ : अमरीक सिंह जी ने कहानी, उपन्यास एवं लघुकथा में अपनी कलम चलाई है। दीपजी नौ कहानी संग्रह (कहाँ जाएगा सिद्धार्थ, कालाहण्डी, चांदनी हूं मैं, सिर फोड़ती चिड़िया, काली बिल्ली, एक कोई ओर वनपाखी, अमरीक सिंह दीप चुनी हुई कहानियाँ, वह मिथक नहीं), दो उपन्यास (एक और पांचाली, तीर्थाटन के बाद) लघुकथा संग्रह (आजादी की फसल) कड़े पानी को शव व झाड़े रहो, कलक्टरगंज (दो लेख संग्रह की पुस्तकें), पुस्तके पंजाबी से हिंदी में अनूदित (रेत में डूबी नदियां (उपन्यास), बिहारी एक्सप्रेस (उपन्यास), ऋतुनागर, शाने पंजाब, बर्फ का दानव, नोमैंन्सलैण्ड, विदिशा की बासंती एवं पंजाबी की चुनी हुई कहानियाँ, आठ कहानियाँ पंजाबी एवं 6 कहानियों का प्रसारण हुआ। तीर्थाटन कहानी फिल्म निर्माण हेतु अनुकेन्द्रित किया गया है। 150 से ज्यादा कहानियां साहित्यिक पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

कथा भाषा द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सर्वभाषा कहानी प्रतियोगिता में बेस्ट वर्कर कहानी को प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया है। इसी कहानी पर रांची दूरदर्शन द्वारा टेलीफिल्म निर्मित हुआ था। एक दर्जन से अधिक कहानियां विविध संग्रहों में संग्रहित हुए। अमरीक सिंह दीप जी किसी भी विचारधारा के समर्थक नहीं थे। वे स्वयं कहते है कोई भी विचारधारा लेखक को सीमित कर देती है और उसी के अनुरूप ही चलना पड़ता है। इसीलिए मैं किसी विशेष विचारधारा में विश्वास नहीं करता हूँ। अमरीक सिंह दीपजी समाजवादी तथा वामपंथी विचारधारा का समर्थन करते हैं क्योंकि अमरीक जी कहानियों में अत्यधिक समाज में दलित मजदूरों, निरक्षाधिक की व्याख्या की गई है।

सामाजिक सरोकार : सामाजिक का अर्थ–समाज से जुड़ा होना है। सरोकार का अर्थ–प्रयोजन, वास्ता, तालुक्क, पहलू, संदर्भ, आयाम, संबंध तथा परिणाम आदि से है। अमरीक सिंह जी समाज में आये अनेक बदलाव को अपने अनुभव और विचारों के द्वारा कलमबद्ध करते हैं क्योंकि साहित्य ही समाज का दर्पण है। समाज में हो रहे अच्छे–बुरे बदलाव का अनुभव हमें लेखक द्वारा लिखी गई साहित्य से पता चलता है। समाज के विकास के साथ–साथ समस्याओं का स्वरूप भी बदलता गया और वे निरन्तर जटिल होती चली गई। गरीबी, निरक्षरता, पिछड़ापन, जातिवाद, आतंकवाद, विद्रोह, स्त्री पर होते रहे अत्याचार, पुरुषाधिपत्य आदि समाज को हाशिए पर धकेल रहे हैं। राजनीतिक चेतना उभार मनुष्य मात्र की प्रतिष्ठा में आस्था, जागृति का रूप लेकर अधिकारों की रक्षा में खड़ा दिखाई देता है। यहीं कारण है कि आज अनेक

सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आंदोलन हुए हैं, नये–नये कानून बने हैं और संपूर्ण सामाजिक परिदृश्य में एक नई लहर तरंगायित करने का प्रयास हुआ है, इसमें साहित्यकारों का योगदान भी अहं रहा है, जिन्होंने सामाजिक सरोकारों को शिद्दत से निभाया। समाज को जगाने के लिए लेखकों ने साहित्य जैसे प्रभावी माध्यम को अपना हथियार बनाया जिससे समाज में क्रांति के बीज बोए गए, फलतः विश्वक्रांतियां आज हमारे सामने हैं। अमरीक सिंह दीप किस्सागोई के उस्ताद माने जाने वरिष्ठ कथाकार हैं। उन्होंने गरीबी, प्रेम, स्त्री शिक्षा, विद्रोह आदि इन सभी रचनाओं को पाठक के सामने प्रस्तुत किया है। दीपजी की कहानियाँ अधिकतर मनुष्यता के पक्ष में नहीं खड़ी दिखाई देती बल्कि अमानवीय व्यवहार का मुखर विरोध भी करती है। दीपजी की कहानियों में जहाँ सामाजिक विसंगतियों, सांप्रदायिकता भावनाओं, खोखली तथा बदलती मान्यताओं का चित्रण हुआ है। वही शोषण, अत्याचार, भ्रष्टाचार, टूटते–रिश्ते, अनमेल बाल विवाह और आसपास घटने वाली घटनाओं का भी समावेश हुआ है। गरीब और निम्नवर्गीय लोगों पर बढते हुए शोषण पर भी उजागर किया है। इन सभी विषयों को मूल विषय बनाकर अमरीक सिंह दीप की कहानियों में कुछ इस तरह से प्रस्तुत किया गया है–

1. चोर : अमरीक सिंह जी की यह कहानी बाल कर्मचारी, गरीबी एवं उनके ऊपर की दृष्टिकोण पर पाठकों के सामने लाने का प्रयास किया है। इसमें तनु नाम की बच्ची हैं जिसकी गुड़िया खो जाती है और वह रो–रोकर पूरे घर को परेशान कर देती है। उस घर में बरतन धोने का काम करने एक 12–13 साल की छोटी सी बच्ची आती रहती है। तनु की गुडिया खो जाने से तनु की मांचोरी का इल्जाम इस छोटी बच्ची पर लगाती है और अपने पति से उसे ढूंढकर ले आने का जिम्मा सौंपती है। वह एक लेखक भी था। गुडिया को ढूंढते हुए वह एक स्लम एरिया पहुंचता है जहाँ बरतन मांझने वाली छोटी बच्ची का परिवार रहता है। परिवार के सारे सदस्य काम करने के बावजूद एक वक्त की रोटी भी पूरी तरह से नसीब नहीं होती है। बच्ची को पढाई में रूचि है पर परिस्थितियों के कारण काम पर जाना पडता है। वह बच्ची उस बोलती गुड़िया जिसके अंदर अंग्रेजी का कैसेट लगाया हुआ है, अपने साथ ले आती है। वह बच्ची के एक हाथ में नर्सरी की पुरानी कॉपी और दूसरे हाथ में उंगली की पोर बराबर पेंसिल है, गुडिया के सामने दो दीवारों के कोण पर तनु की गुडिया। यह देखकर तनु का पिता सुदीप मेरा सारा आदर्शवाद पीले पत्तों की तरह खडखडाने लगता है। ढहने से बचने के लिए कच्ची दीवार का सहारा लेता हूँ और चोर की तरह अपने आप में छिपने के लिए फिर कोई कोना तलाशने लगता हूँ।''[1]

कहानीकार इस कहानी के माध्यम से यह उजागर किया है कि पढ़ाई में रुचि होने के बावजूद छोटी सी बच्ची पारिवारिक परिस्थितियों के कारण वह शिक्षा से वंचित रह जाती है और मजबूरन काम पर जाना पड़ता है। लेकिन बच्चियों से काम करवाते हुए उनकी बचपन छीन लेते हैं और अधिकारों से वंचित रखते हैं। यह कहानी हमें यह सोचने पर मजबूर कर देती है कि चोर कौन है?

2. प्यास : अमरीक सिंह दीप की यह कहानी सामाजिक रूढ़ियाँ जैसे शराब, लॉटरी की लत से लोगों की मजबूरी आदि विषयों का उजागर किया गया है। यह कहानी एक शराबी व्यक्ति जुग्गीलाल की है जो दारू के लिए जगह जगह मार खाता था। एक दिन दारू के विज्ञापन ने आग में घी का काम किया। संदूक में भरे हीरे जवाहरात को दरकिनार कर उसमें रखी विलायती शराब की बोतल उठा लेता है। जुग्गीलाल की पत्नी हर रोज लॉटरी खरीदती है ताकि उसकी लॉटरी का नंबर लगजाए तो उसकी आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा और वह अपनी बच्चों को भरपेट खाना खिला पाएगी। यह परिस्थिति इस परिवार को गरीब से और गरीब बनाती है। जब जुग्गीलाल को पुलिस पकडकर जेल में डाल देती है तो उसकी पत्नी की बहन माया बच्चा को खिलाने के लिए कुछ पैसे देती है तो फिर से वह लॉटरी की दो टिकटें खरीदती है ताकि उसका नंबर लग जाए तो बडा से बडा वकील को खडा करना चाहती है पति को छुडाने के लिए।

शराब लॉटरी की लत जैसी बुरी आदतों के कारण परिवार बिखर जाते हैं। लेखक इस कहानी में स्त्री का दायित्व कुछ वाक्यों के माध्यम से दर्शाया है– ''स्त्री तो धरती मैया की तरह होने है। वह पैदा करे है, पाले है, जिलावे है। जइसन भगवान शेषनाग के फन पे इ पृथ्वी टिकी है, वइ सन की स्त्री की पीठ पर घर टिका होवे है।''[2]

3. एक कप चाय : अमरीक सिंह दीप की कहानी 'एक कप चाय' कहाँ जाएगा सिद्धार्थ कहानी संग्रह से

लिया गया है। यह कहानी एक बूढ़ी मां की है जिसके तीन तीन बेटे और बहुएं होकर भी एक कप चाय के लिए तरसती रहती है। परिवार में तीनों बेटों की बंटवारा उसे अपनी ही बनाई हुई रसोई से दूर कर देती है। कभी एक वक्त ऐसा भी था कि वह लोगों से पूछकर चाय बनाकर पिलाती थी। आज खुद ही एक कप चाय के लिए तरसती रही। आज के आधुनिक परिवार, जो एक घर से रहते हुए बंट जाते हैं तो मां असहाय गृहणी और अबला औरत किसी मुल्क की तरह टुकडों में बंट जाती है।

इस कहानी में अमरीक सिंह जी ने एक मां की वेदना को कुछ इस तरह से प्रस्तुत किया है–''जिस रसोई में सारे बर्तनों और डिब्बों को हारमोनियम के रंग बिरंगे रीड्म की तरह उसने अपने पूरे चावों और साधों के साथ सजाया था, वह अब छोटी बहू को कब्जे में आ चुकी है।''[3]

4. अंधेरे का सफर : यह कहानी अमरीक सिंह दीप जी की कहानी संग्रह 'कहां जाएगा सिद्धार्थ' से लिया गयाहै। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने उस बेबस मां–बाप की व्यथा को चित्रित किया है। जो अपनी बेटियों की ब्याहकर के ससुराल भेजते हैं। यह कहानी नेहा और उसके ससुराल वालों की है। इस कहानी का मुख्य पात्र नेहा के माता पिता अपनी बेटी नेहा को ससुराल छोडने जाते हैं तो वहां उनका निरादार और अपमान होता है। नेहा के पति शराबी है, उस पर बहुत जुल्म करता है, फिर भी सब कुछ सहकर रहती है, नेहा के ससुराल वाले इन बातों का गंभीरता से लेकर अपने बेटे को समझाए बिना नेहा को समझाते हैं कि यह सब बहुत छोटी सी बातें हैं और नेहा को आखिर ससुराल ही आना है।

लेखक इस कहानी के माध्यम से हमें यह सोचने पर विवश कर देते हैं कि क्या बेटी की ब्याह के बाद ससुराल ही सका घर है और जिस घर में पैदा हुई, पली बढी है क्या वह घर पराया है। यह सब देखते हुए नेहा के पिता के मन में यह प्रश्न उठताहै– ''मुझे आज तक समझ में नहीं आया कि बेटी को ससुराल भेजने के पीछे मां बाप की क्यागर्जहोसकतीहै। बेटी देने का अर्थ अपने मान सम्मान को गिरबी रख देना तो नहीं है। यह तो सृजन की एक हाथ में दूसरे हाथ तक निरन्तर आगे बढ़ायी जाने वाली घाव की मशाल है। इस मशाल को दूसरे शवक के हाथ सौंपने के पीछे माँ–बाप की क्या गर्ज हो सकती है?''[4]

5. कालेपानी की झील : अमरीक सिंह दीप द्वारा लिखित यह कहानी कालेपानी की झील में आधुनिकता की आड़ में पश्चिमी सांप्रदायिकता जैसे लिव इन रिलेशनशिप यानि बिना ब्याह स्त्री और पुरुष का साथ में रहना और शादी के पूर्व मां बनने जैसी विषम परिस्थितियों को उजागर किया है। इस कहानी में नायिका उत्तरा नौकरी करती है। एक कवि सम्मेलन में परिमल नामक कवि से मुलाकात करती है। परिमल एक शादी शुदा व्यक्तिहै, उनकी पत्नी अपने बच्चों को साथ लेकर बूढे सास–ससुर के साथ रहती है। चंद मुलाकातों में उत्तरा परिमल से संबंध बना लेती है। वह समझती है कि बिना शादी किसी के साथ रहना यानि लिव इन रिलेशनशिप में रहना, बच्चों को जन्म देने में क्या गलती है? उस पर कुछ फिल्म सितारों का असर है जो बिना शादी किए साथ रहना आम बात मानते है।

लेखक ने फिल्मी सितारों पर कुछ इस तरह तीखा प्रहार किया है। ''फिल्मी सितारों के विवाहेत्तर संबंध होते थे, रेखा फलां फिल्म की शूटिंग छोड़कर अमिताभ से मिलने बंगलौर जा पहुंची, सारिका ने बिना विवाह के एक बेटी को जन्म दिया और होती थी नारी चेतना की प्रगतिशील पत्रिकाएं।''[5]

ऐसे रिश्तों में आदमी क्या है, जब शादी का वक्त आते ही ब्रेकअप कहकर चला जाता है लेकिन स्त्री को ही अपमान सहना पड़ता है अगर बिना शाादी बच्चे हुए तो औरत को ही इसकी जिम्मेदारी लेनी पड़ती है। पाश्चात्य देशों में ऐसे रिश्तों से पैदा हुए बच्चों की सरकार ही पालन पोषण करती है। लेकिन इस देश में औरत को ही यह जिम्मेदारी उठानी पड़ती है।

6. मिल्कियत : अमरीक सिंह दीप जी द्वारा लिखित यह कहानी उन गरीब, निम्नवर्गीय लोगों की पुरूषाशिपत्य और बेबस औरतों की, बेटियों की जिंदगी को दर्शाया है, जहां गांव के पंचों की तानाशाही चलती है। जहां कुछ पैसों की और शराब की बोतलों की लालच में एक दफा फैसले किए जाते हैं। बेटियां और निस्सहाय औरतों पर जुल्म किए जाते हैं।

इस कहानी में निम्नवर्गीय स्त्री जिसकी दो बेटियां है जिसके ऊपर पुरुष का कोई साया नहीं है। वह अपनी बेटी गंगी का ब्याह द्वारिका नामक पुरुष जो शराब पीकर अपनी पत्नी गंगा को मारता था। गंगा का हालत बुरी हो जाती है। यह सब देखकर अपनी बेटी को अपनी घर ले जाती है। द्वारिका अपनी ससुराल आकर गंगा को वापस भेजने की धम की देता है। न मानने पर उसे पंचों के सामने रखकर गंगा को वापस ले जाने की धमकी देता है। गांव के पंचों को कुछ पैसे और शराब का लालच देकर अपनी तरफ कर लेता है। एक दिन जब गंगा की मां घर पर नही थी तब समय देखकर द्वारिका कुछ गुंडों के साथ गंगा को जबरन उसे रिक्शे में डालकर अपने साथ ले जाता है। गंगा बहुत विरोध करने के बावजूदलेजाताहै।सब बिरादरी वाले देखते रह जाते हैं। पंचों के फैसला के खिलाफ कोई जाना नहीं चाहते क्योंकि हुक्का पानी बंध करने का डर है।''[6]

7. नाचो जी आर यार : अमरीक सिंह दीप द्वारा रचित 'नाचो जी आर यार कहानी निम्न अछूत वर्ग की नारकीय जिंदगी को जीने लायक बनाने का शब्द शुद्ध है। यह कहानी एक ऐसे व्यक्ति की जिंदगी की है जो लंबा सफर तय कर वह अपनी जिंदगी की कूडा गाडी को हंसो वाले बैंड के रथ में बदल पाया है। कितना लंबा सफर कितना लंबा वक्त।

इस कहानी के माध्यम से लेखक ने ठाकुर साहबों को नंगा कर दिया है। यह ठाकुर साहब जो निम्नवर्ग के स्त्रियों को अपना भोग की वस्तु समझते हैं। उदाहरण के लिए ''उसे देखते ही ठाकुर साहब आवाज दी थी–क्यों वे, आज तेरी बहनिया कहां हैं?

ऊ.....उसका तो बाबू साहब कल गौना हुईगा।

ते दूसरा की बहनियां को भेज देना। तू यहां क्या मां....। चूना, औरत और पानी इनकी कोई जात नही होती। जिस ठौर रहे शुद्ध ही शुद्ध और फिर ये नीच जात की औरतें कसे हुए तबले की तरह होती है। एक दम टन्न। और भई ये टन्नमाल तो पहले राजा ही भोगता है।''[7]

8. मकान भी इंसान होते है : दीप जी की यह कहानी रमा की है जो अपनी शादी के पांच वर्ष पश्चात् अपने शहर में आयी है। वह जन्म से लेकर विवाह पूर्व तक हम सफर रहे शहर में आ गए। परिवर्तनों को देख रही है। उसकी आंखों की पुतलियों पर जुगनु जल बुझ रहे है। हरियाली का दम टूटने लगा है। मकानों और दुकानों में कोई अंतर नहीं रह गया है।

''क्या यह सच नहीं है कि जिस मकान में इंसान अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा गुजार देता है, वह मकान ईंट–पत्थर की इमारत न रहकर एक जीवित इंसान में तबदील हो जाता है? एक ऐसा जीवन साथी, जो मनुष्य को सर्दी, गर्मी, बरसात, आंधी और तूफान से बचाता ही है, बाहर से थक टूट और हताश होकर आने पर अपने आंचल की छांव तले लेकर मनुष्य की सारी थकान और हताशा हर लेता है, उसे सुखप्रद नींद प्रदान करता है। वर्षों किसी मकान में कोई नही रहता तो कैसे तन तन्हा और सोगवर से नजर आते हैं ऐसे मकान। अगर पत्थर भगवान हो सकते हैं तो मकान इंसान क्यों नहीं हो सकते?''[8]

9. विलाप :अमरीक सिंह दीप की इस कहानी में एक अधेड़ व्यक्ति जो गर्मी के मौसम में मेहनत से पांच सौ रुपये कमाता है और एक पढा लिखा व्यक्ति उसको धोखा दे देता है और वह व्यक्ति पोस्ट ऑफिस में विलाप करता है लेकिन वहां उसकी कोई नहीं सुनता है वह गरीब पोस्ट बॉक्स के पास रो–रोकर विलाप करता है।

''मैं हर पढे लिखे आदमी की ओर से प्रायश्चित करना चाहता था, पर मेरे पास कुल जमा दो सौ रुपये थे। नहीं दो सौ भी नहीं.....दस रुपये तो बतौर बख्शीश मैंने शर्मा जी को दे दिए थे। एक सौ नब्बे रुपये थे मेरे पास।....लेकिन कुछ तो करना ही होगा।''[9]

भैया, ये कुछ रुपये हैं मेरे पास। इन्हें रख लो। मेरा देखा देखी कुछ और लोगों ने भी मदद के लिए पांच पांच, दस–दस रुपये के नोट जेबों से निकालने शुरू कर दिए थे। रुपए देखकर रोता हुआ आदमी बुरी तरह से बिलबिला उठा था–''बाबू साहेब, हम भिखारी नहीं है।''[10]

10. कहां जायेगा सिद्धार्थ : यह कहानी अमरीक सिंह दीप की पहली कहानी संग्रह कहा जाएगा। सिद्धार्थ से लिया गया है जो 1988 में साहित्य सदन, कानपुर द्वारा प्रकाशित किया गया है। यह कहानी सांप्रदायिकता के विरूद्ध

लिखी गई कहानी है। धर्म के आड में लोगों को भडकाने वाले गुरूजनों, बाबाओं पर उजागर किया गया है। इस कहानी का नायक एक अल्पसंख्यक समुदाय का हैं और उसकी पत्नी दो जवान बच्चें की मां होने के बावजूद नायक से पुनः मां बनने के लिए दबाव डालती है। वह इसलिए की गुरूद्वारे में आये उसके धर्म उपदेशको ने कहा।

''जरा होश में आइए लेखक महाराज। शर्म और हया करने का वक्त नहीं रह गया है अब। अपना पूरा संप्रदाय संकट से गुजर रहा है। मालूम है, आज दोपहर स्त्री सत्संग में अपने प्रदेश की एक बहुत बडी धार्मिक नेता आयी थी. ....कह रही थी, इन हादसों में अपने संप्रदाय की अपारजन हानि हुई है। इस संघर्ष में आहुति देने के लिए हम औरतों को अब आगे आना होगा। आज से हमारा ये फर्ज हो जाता है कि हम अपनी घटती हुई जनसंख्या में इजाफा करने के लिए ज्यादा से ज्यादा बच्चे पैदा करें।''[11]

निष्कर्ष : कहानी जीवन के यथार्थ की प्रतिछाया होती है क्योंकि किसी भी समाज या व्यक्ति के जीवन से जुडी होती है जो कुछ समाज में घटित होता है रचनाकार उसे अपनी रचना के माध्यम से उसे कहानी का रूप देता है। आधुनिकता की दौड में पारिवारिक परिवेश में होने वाले परिवर्तन इनकी कहानियों का मूल केन्द्र हैं। अमरीक सिंह दीप जी इस विषय पर कहते हैं– ''जब सामाजिक विद्रूपताएं विषमताएं और विसंगतियां मुझे प्रभावित करती हैं और मेरा हृदय जब इन्हें सहन न हीं कर पाता है तो मुझे अपनी कलम का सहारा लेना पडता है और एक नयी कहानी का जन्म होता है। अमरीक सिंह दीपजी ने पूंजीवादी व्यक्तियों द्वारा गरीब जनता का खून चूसने वाली व्यवस्था का विरोध किया है। पूंजीवादी व्यक्ति गरीब जनता का अपने कार्य सिद्ध के लिए शोषण कर रहे हैं। आपने सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया है। अमरीक सिंह दीप एक स्वतंय लेखक है। आपके साहित्य में संवेदना, सौंदर्य और गहनता कूट–कूटकर भरी पडी है। आपके साहित्य में जहां सामाजिक विसंगतियाँ सांप्रदायिक भावनाओं, खोखली व्यवस्थाओं तथा बदलती मान्यताओं का चित्रण हुआ है, वही शोषण, अत्याचार, भ्रष्टाचार टूटते–रिश्ते और आसपास घटित घटनाओं का भी समावेश हुआ है। वे धर्म, ईश्वर के नहीं मानते हैं क्योंकि इसके कारण ही समाज में समस्याएं बढ़ रही है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. अमरीक सिंह दीपकृत काली हांडी कहानी संग्रह चोर, पृ. 23
2. अमरीक सिंह दीपकृत काली हांडी कहानी संग्रह चोर, पृ. 48
3. अमरीक सिंह दीपकृत कहां जाएगा सिद्धार्थ कहानी संग्रह एक कप चाय पृ. 63
4. अमरीक सिंह दीपकृत कहां जाएगा सिद्धार्थ कहानी संग्रह अंधेरे का सफर पृ. 57
5. अमरीक सिंह दीपकृत कहां जाएगा सिद्धार्थ कहानी संग्रह कालेपानी की झील पृ. 31
6. अमरीक सिंह दीपकृत कहां जाएगा सिद्धार्थ कहानी संग्रह मिलकियत पृ. 40–49
7. अमरीक सिंह दीपकृत कहां जाएगा सिद्धार्थ कहानी संग्रह नाचो जी.आर.यार पृ. 15
8. अमरीक सिंह दीपकृत एक कोई और कहानी संग्रह मकान भी इंसान होते है पृ. 20
9. अमरीक सिंह दीपकृत एक कोई और कहानी संग्रह विलाप पृ. 11
10. अमरीक सिंह दीपकृत एक कोई और कहानी संग्रह विलाप पृ. 14
11. अमरीक सिंह दीपकृत कहां जाएगा सिद्धार्थ कहानी संग्रह कहां जाएगा सिद्धार्थ पृ. 155

–अनुराधा पाकलपाटि
पीएच.डी. शोधार्थी
उच्चशिक्षा शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास
चेन्नई– 600017
दूरभाष : 07299012063